Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
July 2024 5(7), 214–226

A SOCIOLOGICAL STUDY ON CHILD LABOUR: IN THE CONTEXT OF CHILDREN'S PSYCHOLOGY, HEALTH, EDUCATION AND FAMILY LIFE

बाल श्रम पर एक समाजशास्त्रीय अध्ययन: बच्चों के मनोविज्ञान, उनके स्वास्थ्य, उनकी शिक्षा तथा उनके पारिवारिक जीवन के सन्दर्भ में

Rajesh Singh [1], Sarita Verma [2]

[1] Research Scholar, Department of Sociology, Maharishi School of Science and Humanities, Lucknow, India
[2] Research Director, Assistant Professor, Department of Sociology, Maharishi School of Science and Humanities, Lucknow, India

DOI
10.29121/shodhkosh.v5.i7.2024.2309

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2024 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

ABSTRACT

English: Child labour is a serious social abuse that affects the future of children, especially in developing countries. This study examines the effects of child labour on children's psychology, health, education and family life in the context of the shoe industry in Agra district. Child labour is extremely common in the shoe industry in Agra district, where they have to work under difficult and dangerous conditions. The study was conducted through primary data collection through interviews among local workers, industry owners and concerned officials. The results indicate that economic deprivation, lack of education and absence of social policies promote child labour. Also, the study highlights that child labour has a serious negative impact on the physical and mental development of children.

Hindi: बाल श्रम एक गंभीर सामाजिक दुर्व्यवहार है, जो विशेष रूप से विकासशील देशों में बच्चों के भविष्य को प्रभावित करता है। यह अध्ययन आगरा जिले में जूता उद्योग के संदर्भ में बाल श्रम से बच्चों के मनोविज्ञान, उनके स्वास्थ्य, उनकी शिक्षा तथा उनके पारिवारिक जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों की जांच करता है। आगरा जिले में जूता उद्योग में बच्चों का श्रम अत्यधिक सामान्य है, जहाँ उन्हें कठिन और खतरनाक परिस्थितियों में काम करना पड़ता है। यह अध्ययन प्राथमिक डेटा संग्रहण के माध्यम से स्थानीय श्रमिकों, उद्योग मालिकों और संबंधित अधिकारियों के बीच साक्षात्कार के माध्यम से किया गया। परिणाम बताते हैं कि आर्थिक विपन्नता, शिक्षा की कमी और सामाजिक नीतियों की अनुपस्थिति बाल श्रम को बढ़ावा देती हैं। साथ ही, यह अध्ययन यह भी उजागर करता है कि बाल श्रम बच्चों के शारीरिक और मानसिक विकास पर गंभीर नकारात्मक प्रभाव डालता है।

1. प्रस्तावना

भारत जैसे विकासशील देश में प्राचीन काल से ही श्रम चला आ रहा है। प्राचीन काल में बाल श्रम को समस्या नहीं माना जाता था, लेकिन औद्योगीकरण और शहरीकरण के कारण बाल श्रम एक गंभीर समस्या बन गई। मशीनों से अधिक मात्रा में, तेजी से और कम लागत में उत्पादन होने के कारण लघु उद्योग और हस्तशिल्प उद्योगों में काम करने वाले लोग बेरोजगार हो गए। कृषि क्षेत्र में मशीनों के उपयोग के कारण मजदूर बेरोजगार होने लगे। पहले जो काम लोग अपने हाथों से करते थे, मशीनों द्वारा किए जाने के कारण लोगों के सामने कमाई की समस्या खड़ी हो जाती। मशीनीकरण ने बेरोजगारी की समस्या को जन्म दिया। सत्ताधारी बेरोजगार लोग रोजगार की तलाश में शहरों की ओर पलायन करने लगे, जिससे शहरीकरण हुआ और यह एक समस्या बन गई। ग्रामीण बेरोजगारों के शहर की ओर पलायन का मुख्य कारण कारखानों और उद्योगों में सस्ते श्रम की मांग थी। सस्ते श्रम की पूर्ति के लिए बड़ी संख्या में बच्चों

को कारखानों और उद्योगों में काम पर लगाया गया। कारखानों और उद्योगों में बच्चों को काम पर लगाने का मुख्य कारण यह था कि उन्हें बड़ों की तुलना में कम पैसे देने पड़ते थे और बच्चे किसी तरह की शिकायत नहीं करते थे। बच्चों को मजदूर के रूप में काम पर लगाने का मुख्य कारण यह भी था कि बच्चों को अपने अधिकारों के बारे में कोई जानकारी नहीं थी और वे अपने अधिकारों के लिए आवाज नहीं उठा सकते थे। चूंकि बच्चों का कोई संगठन नहीं था, इसलिए वे हड़ताल या कोई मांग नहीं कर सकते थे। उद्योगों और कारखानों में बच्चों को काम पर लगाने का एक मुख्य कारण यह था कि बच्चों को नियंत्रित करना बहुत आसान था क्योंकि उन्हें डरा-धमकाकर या मारपीट करके आसानी से कोई भी काम करने के लिए मजबूर किया जा सकता था। इन कारणों से बाल श्रम को बहुत बढ़ावा मिला। इसके कारण वर्तमान समय में बाल श्रम एक बड़ी समस्या बन गई है। इसीलिए बाल श्रम की समस्या को समाप्त करने के लिए विभिन्न देशों और संगठनों द्वारा विभिन्न प्रयास किए जा रहे हैं।

बाल श्रम का अर्थ व्यापक है। बाल श्रम एक अलग अवधारणा है। बाल श्रम एक व्यापक अवधारणा है, इसलिए इसे सार्वभौमिक अर्थ देना बहुत मुश्किल है। बाल श्रम शब्द इन दो शब्दों "बाल और श्रम" के संयोजन से बना है। बाल शब्द का प्रयोग 18 वर्ष से कम आयु के व्यक्ति के लिए किया जाता है।यहाँ बालक शब्द का तात्पर्य केवल बालक या किसी विशेष बालक से नहीं है, बल्कि गर्भस्थ शिशु से लेकर वयस्क होने वाले व्यक्ति तक से है। बालक शब्द उन विभिन्न अवस्थाओं का पर्याय है, जिनमें व्यक्ति परिपक्वता के लक्ष्य की ओर बढ़ता है। बालक शब्द का प्रयोग अजन्मे बच्चे के साथ-साथ 18 वर्ष के किशोर के लिए भी किया जाता है। बालक शब्द का प्रयोग कई अर्थों में किया जाता है। कभी इसका प्रयोग शारीरिक तो कभी मानसिक अपरिपक्वता के लिए किया जाता है। लेकिन व्यावहारिक रूप से बालक शब्द कालानुक्रमिक आयु को दर्शाता है। श्रम शब्द का शाब्दिक अर्थ श्रम या मेहनत है। श्रम शब्द से तात्पर्य ऐसे कार्य से है, जिससे शरीर थक जाता है। श्रम का अर्थ ऐसे कार्य से है, जिसके दौरान शरीर शिथिल होने लगता है। जीविका या धन कमाने के लिए जो कार्य किया जाता है, उसे श्रम कहते हैं। अत: श्रम वह कार्य है, जिससे व्यक्ति धन कमाता है तथा अपने और अपने परिवार के लिए भोजन, मकान, वस्त्र और मूलभूत आवश्यकताओं की व्यवस्था करता है। बाल श्रम बच्चों द्वारा किया जाने वाला कार्य है। दूसरे शब्दों में 18 वर्ष से कम आयु का व्यक्ति अपने और अपने परिवार के भरण-पोषण के लिए कार्य करता है, उसे बाल श्रम कहते हैं। लेकिन बाल श्रम एक ऐसा काम है जिसके कारण बच्चे अपना बचपन खो देते हैं। दूसरे अर्थों में बाल श्रम से तात्पर्य ऐसे काम से है जो बच्चों के लिए शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक रूप से खतरनाक है। बाल श्रम वह कार्य है जो बच्चों की सीखने की क्षमता को प्रभावित करता है, उनकी रचनात्मकता को मारता है, उनकी मासूमियत को नष्ट करता है और उनकी पढ़ाई को खत्म कर देता है।

बचपन जीवन का सबसे प्यारा दौर होता है। एक बच्चा जीवन के सभी दुखों, तनावों और बाधाओं से अनजान होता है। एक बच्चे की मासूमियत उसकी सबसे कीमती संपत्ति होती है। एक बच्चे की कल्पना का अप्रतिबंधित प्रवाह, दुनिया की भोली व्याख्या और असंभव को प्राप्त करने और अनंत तक पहुँचने की मासूम इच्छा होती है। लेकिन क्या होगा अगर एक बच्चे को कल्पना करने के बजाय सोचने के लिए मजबूर किया जाए? क्या होगा अगर किसी बच्चे को अपनी मासूमियत छोड़ने और चालाकी भरा नज़रिया अपनाने के लिए मजबूर किया जाए? क्या होगा अगर किसी बच्चे को अपने परिवार के लिए कमाने की ज़िम्मेदारी उठाने के लिए मजबूर किया जाए, जबकि उसे खिलौनों और दोस्तों के साथ खेलना चाहिए? क्या होगा अगर किसी बच्चे को अपने बेफिक्र जीवन का आनंद लेने के बजाय जीवित रहने के लिए संघर्ष करने के लिए मजबूर किया जाए? दुर्भाग्य से, समाज के एक बड़े हिस्से के लिए बच्चा उत्पादन का एक कारक है। बाल श्रम गरीब परिवारों के लिए आय का एक स्रोत है, ILO ब्यूरो ऑफ़ स्टैटिस्टिक्स द्वारा किए गए एक अध्ययन में "बच्चों के काम को आवश्यक माना गया था। (मेहरा केरपालमैन, 1996) कुछ मामलों में, अध्ययन में बच्चे की आय कुल घरेलू आय का 34% से 37% के बीच थी, जो एक गरीब परिवार के महत्व को प्रकट करती है।" जनरल अन्नान कोफी (2007): बाल श्रम के गंभीर परिणाम हैं जो बचपन के वर्षों की तुलना में व्यक्ति और समाज के साथ बहुत लंबे समय तक रहते हैं। युवा श्रमिकों को न केवल खतरनाक कामकाजी परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है, बल्कि उन्हें दीर्घकालिक शारीरिक, बौद्धिक और भावनात्मक तनाव का भी सामना करना पड़ता है। उन्हें बेरोजगारी और निरक्षरता का सामना करना पड़ता है। बाल श्रम में लगे बच्चों की वर्तमान संख्या पर नज़र रखना कठिन है।सरकार बाल श्रम के बारे में मौजूदा डेटा एकत्र या विश्लेषण नहीं करती है, क्योंकि लोगों को पता है कि बाल श्रम कानून के खिलाफ है और वे

परेशानी में नहीं पड़ना चाहते (देवी, 1985, 37)। आंकड़े 1981 में एकत्र की गई जानकारी पर आधारित हैं (HRW 1996, 122)। यूनिसेफ का अनुमान है कि "14 वर्ष से कम आयु के 75 से 90 मिलियन बाल श्रमिक हैं"। (HRW-1996, 122)। वर्ष 2001 में भारत सरकार द्वारा की गई राष्ट्रीय जनगणना में 114 मिलियन बाल श्रमिक थे; श्रम मंत्रालय 37 मिलियन के बारे में बात करता है जो कि दोगुना होगा। संयुक्त राष्ट्र (यूएन) मानता है कि सौ मिलियन बाल श्रमिक हैं। एनएसएसओ के सांख्यिकीय आंकड़ों के अनुसार, जो 1972 से हर पांच साल में विस्तृत रिपोर्ट देता है, यह संख्या 84 मिलियन है, एक अन्य अनुमान स्कूल न जाने वाले स्कूली उम्र के बच्चों की संख्या पर आधारित है, यह मान कर चला जाता है कि ये बच्चे काम करते हैं और इस प्रकार 62 मिलियन बाल श्रमिक हैं (भारत बाल श्रम, एनएसएसओ, 2006)। भारत में बाल श्रम पर किए गए शोधों की कोई कमी नहीं है। लेकिन अधिकांश अध्ययन पहले से पहचाने गए उद्योगों से संबंधित हैं, जैसे अलीगढ़ का ताला उद्योग, मिर्जापुर-भदोही क्षेत्र का कालीन उद्योग, बीड़ी उद्योग, शिव काशी का पटाखा उद्योग, फिरोजाबाद की चूड़ी बनाने वाली इकाइयां आदि।

2. साहित्य की समीक्षा

श्रीमाली, राजेश्वरी और किसान, डॉ. मयूरी (2015) - इस अध्ययन "गुजरात राज्य में बाल श्रम पर एक अध्ययन (गुजरात राज्य के २ ब्लॉकों पर विचार करते हुए)" से पता चला कि ये बच्चे बहुत कठिन परिस्थितियों में काम करते हैं। वे पर्याप्त आराम अंतराल के बिना लंबे समय तक काम करते हैं। इसके अलावा, उन्हें आय में किसी भी नियमित वृद्धि के बिना बहुत कम राशि का भुगतान भी किया जाता है। इसके अलावा, इनमें से अधिकांश बच्चों को बाल श्रम के संबंध में मौजूदा कानूनों की जानकारी नहीं है। 30% बाल मजदूरों को श्रम कार्य से मुक्त माना जाता था,लेकिन वहां की आर्थिक स्थिति ने उनके निर्णय का समर्थन नहीं किया। गरीबी बच्चों को काम करने के लिए मजबूर करने का सबसे बड़ा कारण है। 54% बाल मजदूर अपनी मर्जी, परिवार की आय और अपने माता-पिता की इच्छा से किसी न किसी तरह का श्रम कार्य कर रहे हैं, 46% बाल मजदूर हैं जो स्वेच्छा से श्रम कार्य में संलग्न नहीं होना चाहते हैं, 42% बाल मजदूर शिक्षा के लिए स्कूल जाना चाहते हैं और बाकी किसी भी तरह की शिक्षा लेने के लिए तैयार नहीं हैं क्योंकि उन्हें इसमें कोई दिलचस्पी नहीं है। केवल 17 प्रतिशत बाल मजदूरों को शिक्षा के अधिकार अधिनियम के बारे में पता है। इसके लिए साक्षात्कार पद्धति का इस्तेमाल किया गया है।

वेबबिंक, एलेन, स्मिट्स, जेरोन और जोंग, ईके डे (2015) - इस अध्ययन से "अफ्रीका और एशिया में बाल श्रम: 16 कम आय वाले देशों में छोटे बच्चों द्वारा भुगतान किए गए श्रम में काम के घंटों के घरेलू और प्रासंगिक निर्धारक" ने पाया कि यह भिन्नता मुख्य रूप से घरेलू स्तर के कारकों (एशिया में 95% और अफ्रीका में 77%) के कारण है, जिसमें बच्चे भुगतान के लिए काम करते हैं, जबकि गरीबी अभी भी एक प्रमुख प्रेरक कारक है। माता-पिता की शिक्षा और जनसांख्यिकीय और सांस्कृतिक कारक भी एशिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जबकि अफ्रीका में ये कारक कम महत्व के हैं। अध्ययन के लिए तुलनात्मक पद्धति का इस्तेमाल किया गया है।

ज़फ़र, ज़ुबैदा, सरवर, इसरा और हैदर, सैयद इमरान (2016) - इस अध्ययन "बाल श्रम के सामाजिक-आर्थिक और राजनीतिक कारण: पाकिस्तान का मामला" ने दिखाया कि बाल श्रम के लिए कई सामाजिक-आर्थिक कारक ज़िम्मेदार हैं। मूल कारण के रूप में गरीबी, माता-पिता की आर्थिक स्थिति, बड़े परिवार का आकार, संस्कृति, ग्रामीण-शहरी प्रवास, शिक्षा पर अविश्वास, शिक्षित बेरोजगार थोक, मुफ़्त शिक्षा के प्रावधान में सरकार की विफलता, कानूनों के कार्यान्वयन में निगरानी की कमी, राजनीतिक नेतृत्व की भागीदारी शामिल है। अध्ययन के लिए, शोधकर्ताओं ने एक बहु-परिप्रेक्ष्य लेंस के साथ एक मिश्रित-विधि अभिसरण तकनीक को चुना। मात्रात्मक तथ्यों को इकट्ठा करने के लिए साक्षात्कार अनुसूची का उपयोग किया गया है और गुणात्मक तथ्यों को इकट्ठा करने के लिए साक्षात्कार गाइड का उपयोग एक उपकरण के रूप में किया गया है।

अली, दयांगी हेज़ेलिना बिंती अबांग और अरबशिबानी, जी। रेजा (2016) - अध्ययन "इंडोनेशिया में बाल श्रम: आपूर्ति-पक्ष निर्धारक" ने दिखाया कि बच्चों के बड़े होने पर काम करने की संभावना अधिक होती है क्योंकि बड़े बच्चे आर्थिक कार्यों के लिए अधिक समय देते हैं। सकारात्मक आयु-समूह यह दर्शाता है कि बच्चों के कार्यबल में शामिल होने की संभावना अधिक होती है या उम्र बढ़ने के साथ बढ़ सकती है।

2005 में लड़कियों ने लड़कों की तुलना में लगभग 3% कम काम किया और 2007 में यह प्रतिशत 4% था। घर के मुखिया के साथ जैविक संबंध न होने से बच्चे के काम करने की संभावना बढ़ जाती है। 2005 और 2007 में घर के अन्य बच्चों की तुलना में जैविक बच्चों के काम करने की संभावना 6.9% कम है। इस अध्ययन के लिए डेटा इंडोनेशियाई राष्ट्रीय सामाजिक आर्थिक सर्वेक्षण(SUNAS), 2005 और 2007 के द्वितीयक स्रोत से एकत्र किया गया है। प्रश्नावली पद्धति का उपयोग किया गया है।

बसु, कौशिक (2017) - यह अध्ययन "बाल श्रम और शिक्षा पर नोट्स: एक व्यक्तिगत बयान" क्षेत्र के आंकड़ों के साथ-साथ दस्तावेजी स्रोतों पर आधारित है। बसु कौशिक ने खुलासा किया कि एक कुंद, कानूनी हस्तक्षेप, जैसा कि अक्सर प्रस्तावित किया जाता है, बाल श्रम को कम कर सकता है, लेकिन केवल बाल गरीबी को बढ़ाकर। इस समस्या से निपटने के लिए सरकार, नागरिक समाज और निजी क्षेत्र को शामिल करते हुए हस्तक्षेप करना होगा। जब तक हमारे समय की इस गंभीर समस्या पर ध्यान नहीं दिया जाता, तब तक हम असमानता, अभाव और संघर्ष को बढ़ता हुआ देख सकते हैं। द्वितीयक स्रोतों से एकत्रित सामग्री ने अध्ययन को एक व्यापक रूपरेखा और परिप्रेक्ष्य प्रदान किया है। जानकारी एकत्र करने के लिए साक्षात्कार तकनीक का उपयोग किया गया है।

मखदूम, तैय्यबास रफीक, पटोली, अब्दुल कादिर, नवाज, मुहम्मद और खट्टी, इलअमदीन (2017) - अध्ययन "व्यवसाय में बाल श्रम का उपयोग: क्या यह शोषण है या रोजगार?" यह पता चला है कि बच्चे रुचि की कमी के कारण स्कूल छोड़ देते हैं। उनमें से अधिकांश को कार्यस्थल पर उनके अभिभावकों के रूप में पेश किया गया था और उनमें से अधिकांश के अभिभावक माता-पिता हैं, अधिकांश माता-पिता स्वयं श्रमिक हैं और बहुत कम अशिक्षित हैं। उनमें से अधिकांश को 50-80 रुपये और 100-250 रुपये का भुगतान किया जाता है। उनमें से अधिकांशदो साल या दो साल से कम समय से वहां काम कर रहे हैं और अपनी आय खुद और परिवार दोनों पर खर्च करते हैं। उनमें से अधिकतर लोग रात 8 या 9 बजे काम से घर चले जाते हैं, और अधिकांश लोग यह सोचते हैं कि वे 2014 में अपने काम में योगदान दे रहे हैं।व्यवसायिक चिंता की आय का 5%। शिक्षा की कमी और गरीबी बाल श्रम के निर्धारक पाए गए। चूंकि माता-पिता गरीब हैं, इसलिए बच्चों को काम करना पड़ता है और अधिकांश स्कूल छोड़ देते हैं और अंततः अपने जीवन के बाकी समय गरीब ही रहते हैं। इसके अलावा, माता-पिता भी उन्हें काम करवाने के लिए जिम्मेदार होते हैं। अध्ययन के लिए क्लोज एंडेड प्रश्नावली का उपयोग किया गया।

हेमेनु, एम्मा सेराम, द्वोमोह, इमैनुएल अप्राक्रू और गेके, माविस डाको (2018) - अध्ययन "घाना में बाल श्रम: बच्चों की शिक्षा और स्वास्थ्य के लिए निहितार्थ" ने खुलासा किया कि गरीबी, माता-पिता की अनुपस्थिति और खराब शिक्षा और बाल श्रम कानून बाल श्रम और राजमार्ग पर चीजें बेचने के मुख्य कारण हैं। प्रवर्तन है। अध्ययन से पता चला कि राजमार्ग पर बच्चों की बिक्री की व्यस्तता उनके स्वास्थ्य और शिक्षा को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकती है। अध्ययन में यह भी पता चला कि हाईवे पर सामान बेचना बच्चों के लिए खतरनाक है क्योंकि ट्रैफिक में वाहनों के बीच दौड़ते समय बच्चों का वाहनों से टकराना और उनसे टकराना संभव है। इस अध्ययन से एक और तथ्य यह सामने आया कि बाल श्रम शोषणकारी है और बच्चों को उनके स्वास्थ्य और शिक्षा से वंचित करता है। अध्ययन के लिए गुणात्मक शोध दृष्टिकोण और साक्षात्कार पद्धति का उपयोग किया गया है।

इब्राहिम, अब्दुल्ला, अब्दुल्ला, सलमा एम, जाफर, मोहम्मद, अब्देलगादिर, जिहाद और व्रीस, नान डे (2018) - यह अध्ययन "बाल श्रम और स्वास्थ्य: निम्न और मध्यम आय वाले देशों में बाल स्वास्थ्य पर बाल श्रम के प्रभावों की एक व्यवस्थित साहित्य समीक्षा" बाल श्रम का शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य। PubMed और ScienceDirect ने उन अध्ययनों की खोज की जिनमें 18 वर्ष या उससे कम उम्र के प्रतिभागी शामिल थे, कानून और मध्यम आय वाले देशों (LMIC) में आयोजित किए गए और मात्रात्मक डेटा की रिपोर्ट की। दो स्वतंत्र समीक्षकों ने डेटा निष्कर्षण किया और अध्ययन की गुणवत्ता का आकलन किया। अध्ययन के परिणाम कुल 25 छात्रों की पहचान की गई, जिनमें से अधिकांश शब्द क्रॉस-सेक्शनल हैं। बाल श्रम कई प्रतिकूल स्वास्थ्य परिणामों से जुड़ा पाया गया है, जिसमें खराब विकास, कुपोषण, संक्रामक और प्रणालीगत विशिष्ट बीमारियों की उच्च घटना, और कम व्यवहारिक और भावनात्मक विकार शामिल हैं, लेकिन इन्हीं तक सीमित नहीं हैं।

आहूजा, दमन और कल्पना, बी. (2019) - अध्ययन "बाल श्रम की व्यवहार संबंधी कठिनाइयाँ - दिल्ली की मलिन बस्तियों में स्कूल जाने वाले और काम करने वाले बच्चों का तुलनात्मक अध्ययन" से

पता चला है कि बाल श्रम का उन बच्चों के व्यवहार और भावनात्मक पहलुओं पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। समान सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि वाले स्कूल जाने वाले बच्चों की तुलना में। निष्कर्षों से पता चला कि बाल श्रम में कुल कठिनाई (45.2%) स्कूल जाने (36%) की तुलना में अधिक थी। सामाजिक आचरण समस्या बाल श्रम में पाई जाने वाली सबसे प्रचलित व्यवहारिक समस्या (43.2%) है। कार्य स्थितियों और उच्च आचरण समस्याओं के बीच संबंध सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण पाया गया। कार्य स्थितियों और कठिनाई स्कोर के बीच एक मजबूत सकारात्मक सहसंबंध पाया गया। अध्ययन के लिए उद्देश्यपूर्ण नमूनाकरण तकनीक और प्रश्नावली पद्धति का उपयोग किया गया है।

लाल, बी. सुरेश (2019) - यह अध्ययन "भारत में बाल श्रम: कारण और परिणाम" भारत के शीर्ष पांच राज्यों अर्थात् उत्तर प्रदेश, बिहार, राजस्थान, महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश में बाल श्रम की घटना कुल का लगभग 55% है। भारत में काम करने वाले बच्चे। दूसरा परिणाम यह है कि भारत में कृषि किसी भी अन्य क्षेत्र की तुलना में अधिक बाल श्रम को रोजगार दे रही है। डेटा एकत्र करने के लिए विश्व बैंक, अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन, सेव द चिल्ड्रन और संयुक्त राष्ट्र बाल कोष और विभिन्न अध्ययनों जैसे माध्यमिक स्रोतों का उपयोग किया गया है।

खताब, खालिद, रहीम, मारूफ ए, सार्टोरियस, बेन और इस्माइल, मुबारक (2019) - "ब्येसियन जियोस्पेशियल मॉडलिंग का उपयोग करके मिस्र में बाल श्रम और बच्चों के खिलाफ हिंसा के लिए व्यापकता और जोखिम कारक" इस अध्ययन से पता चला है कि 5-10 वर्ष की आयु के कम से कम 31.6% बच्चे काम कर रहे थे, 11-17 वर्ष की आयु के 68.5% बच्चे मजदूरी के लिए बाल श्रम में लगे हुए थे और 5-10 वर्ष की आयु के 50 वर्ष की आयु के 44.7% बच्चे खतरनाक गतिविधियों में लगे हुए थे। काम। औपचारिक शिक्षा के बिना, गैर-खतरनाक नौकरियों में महिलाओं से पैदा हुए बच्चे, कुछ स्तर के काम वाली माताओं के बच्चों की तुलना में बाल श्रम में संलग्न होने की अधिक संभावना रखते हैं, भले ही काम पर बिताए गए घंटे कितने भी हों (52.9 प्रतिशत, 56.8%, 62.4 प्रतिशत)। जिन बच्चों ने मनोवैज्ञानिक आक्रामकता और शारीरिक दंड का अनुभव किया है, उन्हें बाल श्रम के रूप में इस्तेमाल किए जाने की संभावना उन बच्चों की तुलना में अधिक है, जिन्हें काम के प्रकार और घंटों में ऐसा अनुभव नहीं है। उत्तर-पूर्वी मिस्र में अन्य क्षेत्रों की तुलना में बाल श्रम की संभावना अधिक है, जबकि डेल्टा में रहने वाले बच्चों के खतरनाक काम में शामिल होने की संभावना अधिक है। अध्ययन के लिए बायेसियन जियो-एडिटिव मॉडल का उपयोग किया गया था ताकि प्रतिदिन 16 घंटे से कम काम करने वाले बच्चों के लिए जनसांख्यिकीय और सामाजिक-आर्थिक कारकों की जांच की जा सके; 16 से 45 घंटे से कम; और साप्ताहिक 45 घंटे से अधिक।

साहू, रेन प्रियदर्शिनी (2020)- रेन प्रियदर्शिनी ने अपने अध्ययन "बिना बचपन के बच्चे: भारत में बाल श्रम के पैटर्न और घटनाओं का विश्लेषण" में खुलासा किया कि बाल श्रम पर एनएसएस के अनुमान में केवल आर्थिक रूप से सक्रिय बच्चे शामिल थे, जबकि उनके अनुमान से पता चला कि अधिक बच्चे (श्रम और रोजगार मंत्रालय द्वारा प्रस्तुत आंकड़ों की तुलना में) घरेलू काम में लगे हुए हैं और उन्हें भारत में बाल श्रम के आकलन में शामिल किया जाना चाहिए। लिंग पहलू के संबंध में, इस शोधपत्र ने खुलासा किया कि ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में,आर्थिक गतिविधियों में लड़कों की भागीदारी अधिक है, जबकि लड़कियों की भागीदारी अन्य गतिविधियों में अधिक है और यह पैटर्न सभी उम्र में समान रहता है। एक और निष्कर्ष यह है कि जिस सामाजिक समूह से बच्चा संबंधित है, उसका कामकाजी बच्चों के साथ अधिक मजबूत संबंध है क्योंकि कामकाजी बच्चों में एसटी बच्चों का प्रतिशत अधिक है। अध्ययन के लिए भारत की जनगणना के आंकड़ों और एनएसएसओ के 66वें दौर के आंकड़ों (2009-10) में भारत में रोजगार और बेरोजगारी जैसे माध्यमिक स्रोतों से डेटा एकत्र किया गया।

मेहता, नीति और मोहंती, स्मृतिरेखा (2020) - इस अध्ययन "बाल श्रम की सीमा और कारणों पर विचार" से पता चला है कि सामाजिक और आर्थिक कारकों की एक विविध श्रेणी बाल श्रम में वृद्धि में योगदान करती है। गरीबी उन्मूलन के अलावा, बच्चों के लिए स्कूल में बने रहना और अनिवार्य प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा, उत्पादक रोजगार के अवसर और माता-पिता के लिए शिक्षा जैसे हस्तक्षेपों का एक समग्र संयोजन अधिक यथार्थवादी नीति प्रतिक्रिया की ओर ले जाने की संभावना है। जानकारी एकत्र करने के लिए प्रश्नावली तकनीक का उपयोग किया गया है।

रमज़ान, नाज़ीह, ज़गालौल, नैन्सी मोहम्मद और हेट्टा, शेरिफ़ अहमद (2020) - इस अध्ययन "ग्रेट काहिरा गवर्नरेट, मिस्र में बाल शोषण और बाल श्रम के बीच चिकित्सा-कानूनी संबंध" से पता चला है कि काम करने वाले अधिकांश बच्चे निरक्षर (68%) थे और निरक्षर पिता और माता क्रमशः 48.67% और 45.67% थे। अध्ययन में यह भी पता चला कि अधिकांश बच्चे फेरीवाले (33.33%) के रूप में कार्यरत थे, उसके बाद दूसरे नंबर पर गैरेज में गार्ड के रूप में काम करने वाले बच्चे (16.67%) थे। एक अन्य कारक ने दिखाया कि 11-15 वर्ष की आयु के बच्चे काम में शामिल बच्चों का सबसे आम समूह हैं, जो सभी प्रतिभागियों का 81% हिस्सा हैं, कुल काम करने वाले बच्चों में से 54% भावनात्मक शोषण से पीड़ित हैं, कुल काम करने वाले बच्चों में से 24% बच्चे शारीरिक शोषण के शिकार हैं, कुल काम करने वाले बच्चों में से 15% लापरवाही के शिकार हैं और कुल बच्चों में से 7.5% यौन शोषण के शिकार हैं। नमूने के लिए यादृच्छिक नमूनाकरण पद्धति का उपयोग किया गया था। डेटा एकत्र करने के लिए साक्षात्कार प्रश्नावली का उपयोग किया गया है।

फातफुम, चक्रफान, नुशोर्न, नारोंगसाक और प्राजोंगजीप, अचरा (2021) - इस अध्ययन "निचले उत्तरी थाईलैंड में बरली किसानों के बीच तम्बाकू की खेती और उत्पादन में बाल श्रम से जुड़े कारक" से पता चला है कि 720 श्रमिकों में से 83 (12.4) % घरेलू श्रमिकों ने युवाओं को तम्बाकू की खेती में लगाया है। बाल श्रम से जुड़ी सबसे आम प्रक्रिया तम्बाकू के पत्तों को इकट्ठा करना, काटना और सुखाना था। परिणामों से पता चला कि बाल श्रम की कभी जांच नहीं की गई (95%), बाल श्रम पर नकारात्मक स्वास्थ्य परिणामों के बारे में ज्ञान का निम्न स्तर (95%) और बाल श्रम के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण का उच्च स्तर (95%)। श्रम व्यवहार से जुड़े थे। नमूनाकरण के लिए व्यवस्थित यादृच्छिक नमूनाकरण तकनीक का उपयोग किया गया है। डेटा एकत्र करने के लिए एक संरचित प्रश्नावली का उपयोग किया गया है। डेटा विश्लेषण के लिए SPSS सॉफ़्टवेयर और ची-स्क्वायर परीक्षण का उपयोग किया गया।

ओकपा, जॉन थॉम्पसन, एशियोट्स, इमैनुएल, ओफेम, नाना ओकोई, सिल्वेस्टर, अकोमाये और एंड्रयू, उबोंग स्टीफन (2021) - यह अध्ययन "नाइजीरिया में बाल श्रम और अपराधी व्यवहार: एक जोखिम कारक विश्लेषण" बाल श्रम और अपराधी व्यवहार के आसपास के मुद्दों का विश्लेषण करता है, समस्या की उत्पत्ति का पता लगाता है माँ-बच्चे को। पिता के वित्त से जोड़ता है। स्थिति, सांस्कृतिक प्रथाएँ और माता-पिता की निरक्षरता। इस अध्ययन में यह देखा गया है कि आयु कारक महत्वपूर्ण मुद्दा है - किशोर श्रम और वैध श्रम के बीच का अंतर कार्यकर्ता की आयु है। ऐसा इसलिए है क्योंकि बचपन एक इंसान के लिए विकास की सभी आवश्यक प्रक्रियाओं से गुजरने और एक पूर्ण वयस्क प्रक्रिया में विकसित होने की प्रारंभिक अवधि है, जिसमें औपचारिक और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, अच्छी नैतिक परवरिश और एक उचित और सभ्य समाजीकरण प्रक्रिया शामिल है। इस शोधपत्र में पाया गया कि एक बच्चा जिसे विकास की इस समयबद्ध प्रक्रिया तक पहुँच से वंचित किया गया है, वह निश्चित रूप से कुछ अपराधी व्यवहार प्रदर्शित करेगा। यह अध्ययन इस बात की पड़ताल करता है कि क्या वयस्क श्रम के परिणामस्वरूप बच्चे में वयस्कता की झूठी भावना किशोर अपराध में योगदान देने वाला कारक है।

दुआ, शिखा, मेहता, ऋचा और त्यागी, अंशु (2021) - इस अध्ययन "बाल श्रम का आंशिक मूल्यांकन: एक भारतीय परिप्रेक्ष्य" से पता चला है कि बाल श्रम का मुख्य कारण व्यापक बेरोजगारी और आबादी के वयस्क गरीब वर्ग में बेरोजगारी है। जिसने जनसंख्या वृद्धि के कारण विकराल रूप धारण कर लिया है। तथ्यों और प्रासंगिक जानकारी एकत्र करने के लिए व्यक्तिगत साक्षात्कार और प्रश्नावली की एक विधि अपनाई गई।

अहद, मोहम्मद अब्दुल, पैरी, यवोन करेन और विलिस, एलीन एम. (2021) - इस अध्ययन "चार दक्षिण एशियाई देशों के संदर्भ में बाल श्रम दुरुपयोग की व्यापकता और प्रभाव: एक स्कोपिंग समीक्षा" से पता चला है कि बाल श्रमिकों के खिलाफ शारीरिक शोषण (15.14%) सभी अध्ययनों (2.3% - 73.27%) में असमानता थी। भावनात्मक शोषण की व्यापकता शारीरिक शोषण की तुलना में तीन गुना अधिक थी। यौन शोषण (16.82%) की दर मापी गई, उसके बाद बाल श्रम की उपेक्षा (12.9%) की दर मापी गई। पीड़ितों और देखभाल करने वालों की विशेषताएँ और सामाजिक-सांस्कृतिक प्रथाएँ दुर्व्यवहार के प्रबल भविष्यवक्ता हैं। माता-पिता की टालमटोल भी गरीबी के बाद बाल श्रम की दरों से जुड़ी थी। PRISMA ढांचे के अनुसार, अध्ययन के लिए स्कोपिंग समीक्षा का उपयोग किया गया था। डेटा को स्कोपस, मेडलाइन, साइकइनफ़ो, प्रोक्वेस्ट, वेब ऑफ़ साइंसेज और ग्रे लिटरेचर जैसी प्रासंगिक संस्थागत

वेबसाइटों से एकत्र किया गया था। डेटा का विश्लेषण करने के लिए विषयगत संश्लेषण और अनुपात परीक्षण का उपयोग किया गया।

उद्देश्य

बाल श्रम के बच्चों के मनोविज्ञान, उनके स्वास्थ्य, उनकी शिक्षा तथा उनके पारिवारिक जीवन आदि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

डेटा विश्लेषण

तालिका 1 काम के घंटे

क्र.सं.	धारणा	उत्तरदाताओं की संख्या	%
1.	5	25	10
2.	7	175	70
3.	9	35	14
4.	9 घंटे से अधिक	15	06
	कुल	**250**	**100**

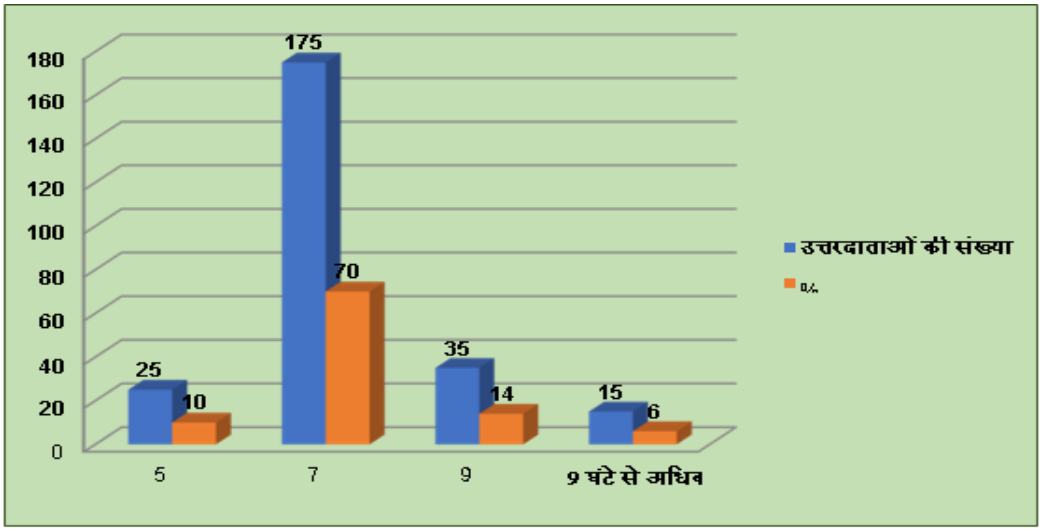

ग्राफ़ 1

उपर्युक्त तालिका के विश्लेषण से, हम उत्तरदाताओं के काम के घंटों का विश्लेषण करते हैं, हम पाते हैं कि 10% उत्तरदाता 5 घंटे काम करते हैं, 70% उत्तरदाता 7 घंटे काम करते हैं, 14% उत्तरदाता 9 घंटे काम करते हैं और 06% उत्तरदाता 9 घंटे से अधिक काम करते हैं।इसलिए, हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि अधिकांश उत्तरदाताओं का 70% उत्तरदाता 7 घंटे से अधिक काम करते हैं।

तालिका 2 मालिक का व्यवहार

क्र.सं.	धारणा	उत्तरदाताओं की संख्या	%
1.	अच्छा	171	68.4
2.	खराब	79	31.6
	कुल	250	100

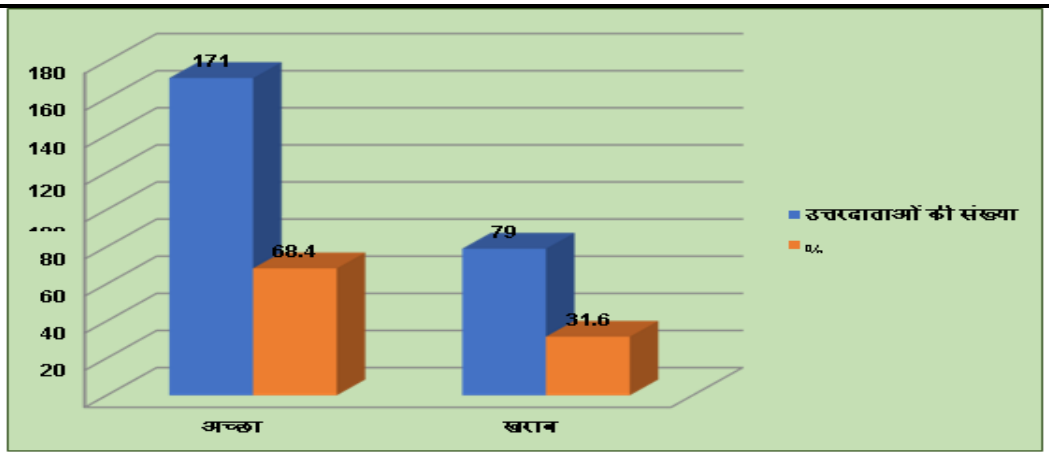

ग्राफ़ 2

उपर्युक्त तालिका द्वारा हमने विश्लेषण किया है कि 68.4% उत्तरदाताओं ने कहा कि उत्तरदाताओं का व्यवहार अच्छा था और 31.6% उत्तरदाताओं ने कहा कि उनके अधिकारी का व्यवहार खराब था। उपर्युक्त तालिका के विश्लेषण से 68.4% उत्तरदाताओं ने उत्तर दिया कि उनके अधिकारी का व्यवहार बहुत अच्छा था।

तालिका 3 परिवार के साथ समय बिताने के अवसर के बारे में धारणा

क्र.सं.	उत्तरदाताओं की धारणा	उत्तरदाताओं की संख्या	%
1.	हाँ	89	35.6
2.	नहीं	51	20.4
3.	कभी-कभी	110	44
	कुल	250	100

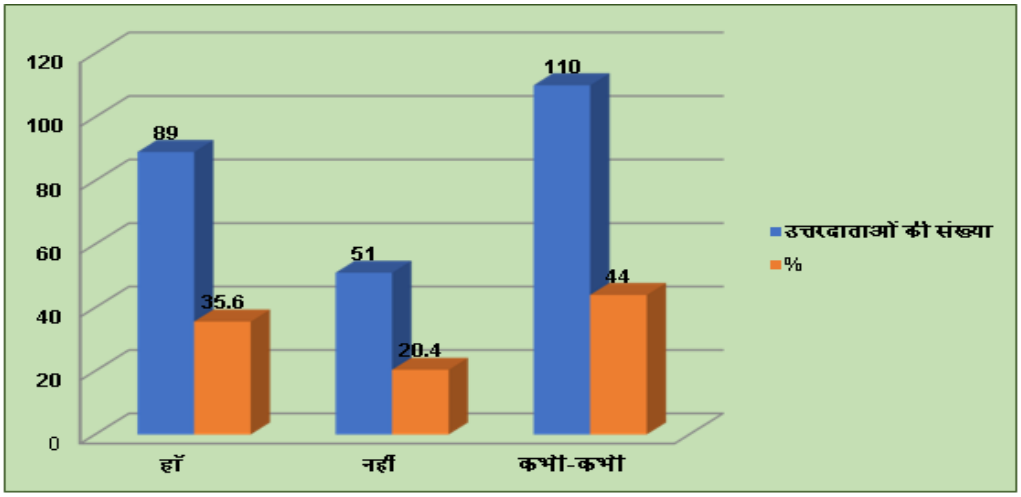

ग्राफ़ 3

उपर्युक्त तालिका से हम पाते हैं कि 35.6% उत्तरदाता सहमत हैं कि वे अपने परिवार के साथ उचित समय बिताने से अधिक संतुष्ट हैं, 20.4% उत्तरदाता अपने परिवार के साथ समय बिताने के अवसर से संतुष्ट नहीं हैं, 44% उत्तरदाता सहमत हैं कि कभी-कभी उन्हें अपने परिवार के साथ समय बिताने का अवसर मिलता है। बाल श्रमिकों में संतुष्टि का स्तर पाया गया जो अपना समय परिवार के साथ बिताते हैं उन्हें लगता है कि उन्हें अपने परिवार के साथ बिताने के लिए अधिक समय की आवश्यकता है। इसलिए, हम निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि केवल 44% उत्तरदाता अपने परिवार के साथ समय बिताने का अवसर पाकर संतुष्ट हैं।

तालिका 4: कार्य समय के दौरान शारीरिक समस्या			
क्र.सं.	उत्तरदाताओं की धारणा	उत्तरदाताओं की संख्या	%
1.	हाँ	167	66.8
2.	नहीं	83	33.2
	कुल	250	100

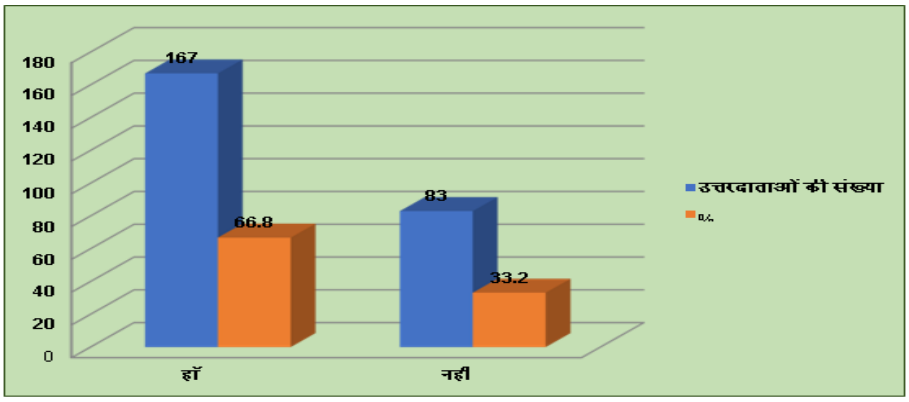

ग्राफ़ 4

उपर्युक्त तालिका से हम कार्य के दौरान शारीरिक समस्या के बारे में विश्लेषण कर सकते हैं कि लगभग 66.8% उत्तरदाताओं को कार्य के दौरान शारीरिक समस्या होती है और 33.2% उत्तरदाताओं को अपने कार्य समय के दौरान शारीरिक समस्या का सामना नहीं करना पड़ता है। इसलिए, हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि अधिकांश 66.8% उत्तरदाताओं को कार्य के दौरान शारीरिक समस्या होती है।

तालिका 5 कार्यस्थल की कार्य स्थिति			
क्र.सं.	उत्तरदाताओं की धारणा	उत्तरदाताओं की संख्या	%
1.	हाँ	187	74.8
2.	नहीं	63	25.2

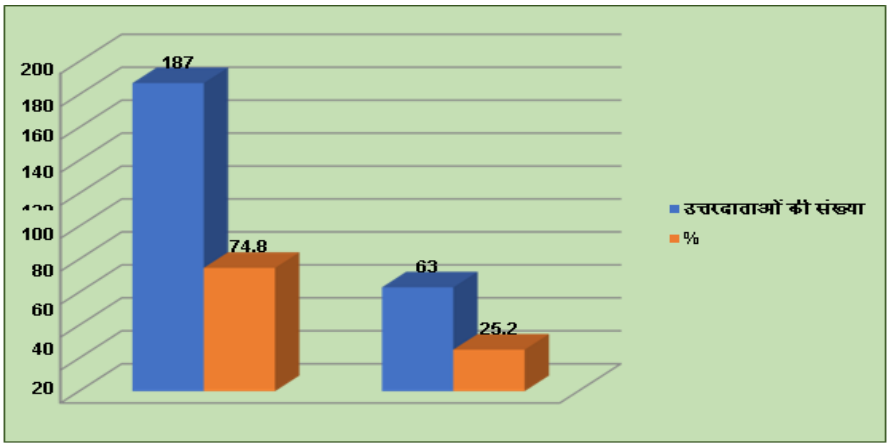

ग्राफ़ 5

उपर्युक्त तालिका से हम पाते हैं कि 74.8% उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया कि काम करने की स्थिति अच्छी है और 25.2% उत्तरदाताओं ने काम करने की स्थिति अच्छी होने से इनकार किया।

इसलिए, हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि अधिकांश उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया कि काम करने की स्थिति अच्छी है।

तालिका 6 काम के घंटों के दौरान उत्तरदाताओं के किसी भी मानसिक और शारीरिक दबाव

क्र.सं.	उत्तरदाताओं की धारणा	उत्तरदाताओं की संख्या	%
1.	हाँ	188	75.2
2.	नहीं	62	24.8
	कुल	**250**	**100**

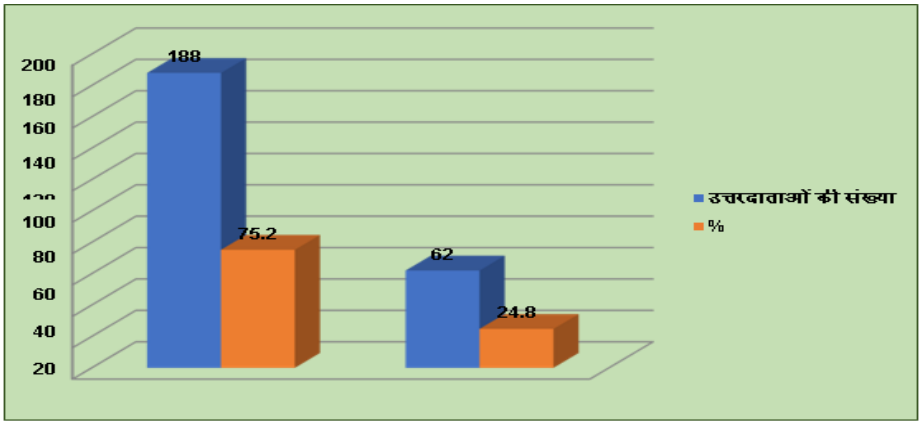

ग्राफ़ 6

उपर्युक्त तालिका के अनुसार हमने पाया कि 75.2% उत्तरदाताओं को कार्य घंटों के दौरान उत्तरदाताओं के मानसिक और शारीरिक दबाव के बारे में महसूस होता है और 24.8% उत्तरदाताओं को कार्य घंटों के दौरान उत्तरदाताओं के मानसिक और शारीरिक दबाव के बारे में महसूस नहीं होता है। इसलिए, हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि अधिकांश उत्तरदाताओं को कार्य घंटों के दौरान उत्तरदाताओं के मानसिक और शारीरिक दबाव के बारे में महसूस होता है।

तालिका 7 पौष्टिक आहार के बारे में विश्लेषण करते हैं जो नीचे दी गई तालिका में दिया गया है—

क्र.सं.	उत्तरदाताओं की धारणा	उत्तरदाताओं की संख्या	%
1.	हाँ	112	44.8
2.	नहीं	138	55.2
	कुल	**250**	**100**

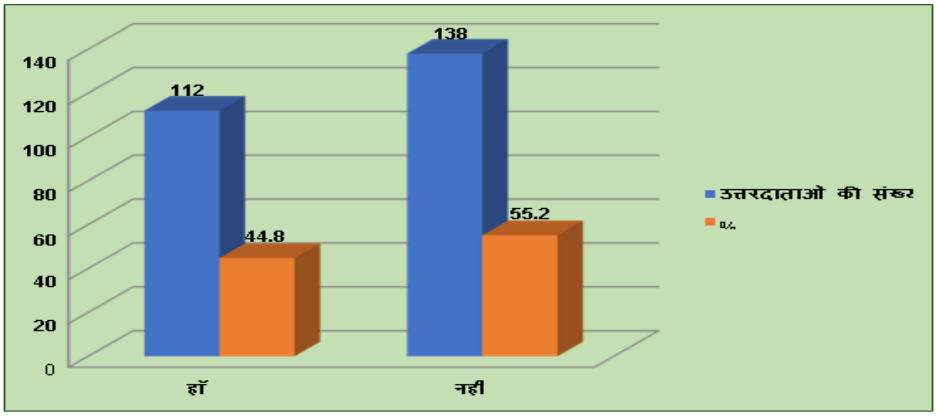

ग्राफ़ 7

उपर्युक्त तालिका के विश्लेषण से पता चलता है कि 44.8% उत्तरदाता उचित पौष्टिक आहार लेते हैं और 55.2% उत्तरदाता पौष्टिक आहार नहीं लेते हैं। इस प्रकार, हम निष्कर्ष निकालते हैं कि अधिकांश उत्तरदाता 56% उचित और पौष्टिक आहार लेते हैं।

तालिका 8 कार्यस्थल पर शारीरिक दुर्बलता

क्र.सं.	उत्तरदाताओं की धारणा	उत्तरदाताओं की संख्या	%
1.	हाँ	190	76
2.	नहीं	60	245
	कुल	**250**	**100**

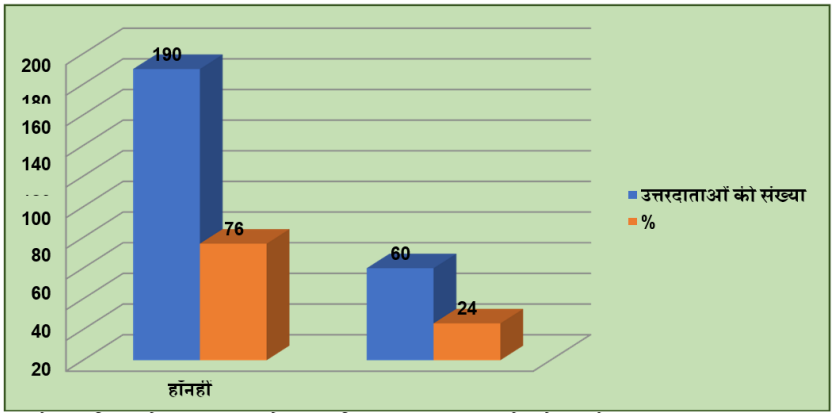

उपर्युक्त तालिका के अनुसार हमने पाया कि 76% उत्तरदाताओं को कार्यस्थल पर शारीरिक अक्षमता महसूस होती है और 24% उत्तरदाताओं ने कार्यस्थल पर किसी भी तरह की शारीरिक अक्षमता से इनकार किया है।

इसलिए, हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि अधिकांश उत्तरदाताओं को कार्यस्थल पर शारीरिक अक्षमता महसूस होती है।

तालिका 9 मनोवैज्ञानिक दबाव महसूस करने के संबंध

क्र.सं.	उत्तरदाताओं की धारणा	उत्तरदाताओं की संख्या	%
1.	हाँ	170	68
2.	नहीं	80	32
	कुल	**250**	**100**

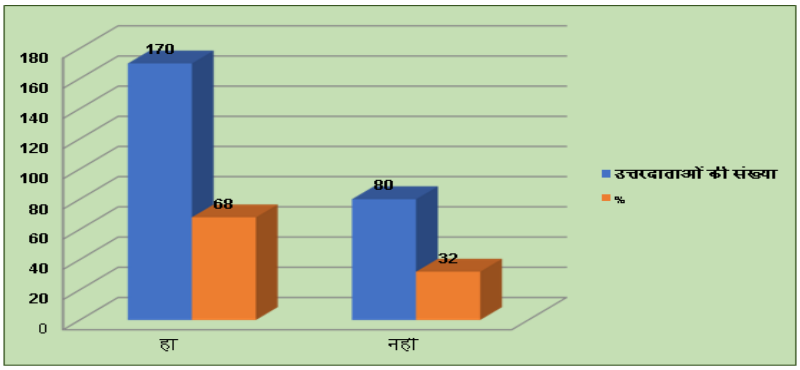

ग्राफ़ 8

उपर्युक्त तालिका से हम विश्लेषण करते हैं कि 68% उत्तरदाता सहमत हैं कि वे मनोवैज्ञानिक दबाव महसूस करते हैं और 32% उत्तरदाता मनोवैज्ञानिक दबाव महसूस करते हैं।

इसलिए, हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि अधिकांश उत्तरदाताओं में से 68% सहमत हैं कि वे मनोवैज्ञानिक दबाव महसूस करते हैं।

3. निष्कर्ष

अध्ययन के निष्कर्ष से पता चलता हैं कि अधिकतम लोंगो को काम के दौरान शारीरिक समस्या होती है। वे काम के दौरान कार्य के बारे में चिंतित रहते हैं। अधिकांश उत्तरदाताओं को अपने काम में खतरा महसूस होता है। अधिकांश उत्तरदाताओं ने माना कि उन्हें काम के घंटों के दौरान मानसिक और शारीरिक दबाव महसूस होता है। अधिकांश उत्तरदाताओं ने इस बात पर सहमति जताई कि वे मनोवैज्ञानिक दबाव महसूस करते हैं। अतः बाल श्रम के शारीरिक और मानसिक दुष्प्रभावों के बारे में जागरूक करना होगा और बच्चों को यह बताना होगा कि बाल श्रम उनके लिए बहुत खतरनाक है। बच्चों को यह बताना होगा कि बाल श्रम उनके शरीर पर बहुत बुरा प्रभाव डालता है। हमें बच्चों के माता-पिता को भी बाल श्रम के बारे में जागरूक करना होगा। बच्चों को कोई खेल खिलाएंगे और उन्हें समझाएंगे कि बाल श्रम से उनके बच्चों का शारीरिक और मानसिक विकास होता है। इसके अलावा बच्चों को शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रेरित करना होगा और उन्हें यह समझाना होगा कि शिक्षा के माध्यम से वे अपना जीवन बेहतर बना सकते हैं। बच्चों को शिक्षा से संबंधित उनके अधिकारों के बारे में भी जागरूक करना चाहिए। शिक्षण-अधिगम सामग्री के माध्यम से शिक्षा को रोचक बनाना होगा, ताकि बच्चा शिक्षा को बोझ न समझे और शिक्षा प्राप्त करने में रुचि दिखाए। शिक्षा को सुलभ और किफायती बनाना होगा, ताकि सभी बच्चे शिक्षा प्राप्त कर सकें। बच्चों के माता-पिता को भी अपने बच्चों को शिक्षा देने के लिए प्रेरित करना चाहिए। बाल श्रमिकों को कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है। खतरनाक क्षेत्रों में काम करना हमेशा बच्चों की सुरक्षा के लिए एक समस्या बनी रहती है। बच्चों को गंदे, धूल भरे वातावरण और सभी मौसमों जैसे गर्मी, सर्दी, बारिश और धूप में काम करने के लिए बुलाया जाता है। इन बच्चों द्वारा गंदे वातावरण और खतरनाक परिस्थितियों में काम करने से कई भयानक शारीरिक और मानसिक बीमारियाँ होती हैं जैसे कैंसर, टीबी, फेफड़ों के रोग, आँखों के रोग, हाथों के चर्म रोग आदि। बच्चों का शरीर बहुत कोमल और नाजुक होता है, इसलिए वे किसी भी बीमारी से ग्रस्त हो सकते हैं। बाल मजदूरी बच्चे के शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक विकास को अवरुद्ध करती है।

CONFLICT OF INTERESTS

None.

ACKNOWLEDGMENTS

None.

REFERENCES

Webbink, Ellen and Smits, Jeroen and de Jong, Elke. (2015). Child labour in Africa and Asia: Household and contextual determinants of hours worked in paid labour by young children in 16 low-income countries. European Journal of Development Research. 27. 84-98. 10.1057/ejdr.2014.19

Shrimali, Rajeshwari and Kisan, Mayuri. (2015). A study on child labour in Gujarat state (considering 2 blocks of Gujarat state)

Zubeda Zafar, Isra Sarwar and Syed Imran Haider, (2016), Socio-economic and political causes of child labour: the case of Pakistan, Global Political Review, 1, (1), 32-43

Haszelina Banti Abang Ali, Dayang and Arabshebani, G. Reza (2016) "Child Labor in Indonesia: Supply-Side Determinants," Economics and Finance in Indonesia: Volume 62: Number 3, Article 4.DOI: 10.47291/efi.v62i3.555Available: https://scholarrhub.ui.ac.id/efi/vol62/iss3/4

Basu K. Notes on Child Labor and Education: A Personal Statement. Children and Sustainable Development: Ecological Education in a Globalized World. 2017:31-5

Makhdum, Tayyiba and Nawaz, Muhammad and Patoli, Abdul Kadir and Khatti, Ilamdin. (2017). The Use of Child Labor in Business: Is It Exploitation or Employment

Hamenu ES, Dwomoh EA, Dako-Gyekye M. Child Labor in Ghana: Impacts on Children's Education and Health. Children and Youth Services Review. 2018 Oct 1;93:248-54.

Ibrahim A, Abdullah SM, Jaafar M, Abdelgadir J, de Vries N. Child labour and health: a systematic literature review of the effects of child labour on children's health in low and middle-income countries. Journal of Public Health. 2019 Mar 1;41(1):18-26

Ahuja D, Kalpana B. Behavioural difficulties of child labour-a comparative study of school-going and working children in Delhi slums. Journal of Advanced Research in Dynamical and Control Systems. 2019;11(7)

Lal BS. Child labour in India: causes and consequences. International Journal of Science and Research. 2019;8(5):2199-206.

Khattab K, Rahim MA, Sartorius B, Ismail M. Prevalence and risk factors of child labour and violence against children in Egypt using Bayesian geospatial modelling with multiple imputation. PLoS One. 2019 May 30;14(5):e0212715.

Sahu, Barsha. (2020). Children without childhood: An analysis of the patterns and incidence of child labour in India. Journal of the Social Sciences. 48. 2650-2656

Mehta N, Mohanty S. Some reflections on the extent and causes of child labour. America. 2020;8(5.3):3-2

Zaghloul, Nancy and Hetta, Sherif and Ramadan, Nazih. (2020). Zaghloul et al. Medico-legal links between child abuse and child labour in Great Cairo Governorate, Egypt

Phetphum, Chakkraphan and Nusorn, Narongsak and Prajongjip, Achara. (2021). Factors associated with child labour in tobacco cultivation and production among burley farmers in lower northern Thailand. International Journal of Pediatrics. 9. 13167-13175. 10.22038/IJP.2021.55138.4346

Okpa JT, Ashiotse E, Ofem NO, Sylvester A, Andrew US (2021). Child labour and delinquent behaviour in Nigeria: a risk factor analysis. Academic Journal of Interdisciplinary Studies. 2021 May;10.

Mehta, R., Tyagi, A., Dua, S. and Khanijau, V., 2021. Meaningful assessment of child labour: an Indian perspective. Turkish Online Journal of Qualitative Inquiry, 12(9)

Ahad M.A., Parry Y.K., Willis E., Ullah S. Risk of neglect among child laborers in rural Bangladesh: prevalence and risk factors. Child Indicators Research. 2021 Apr 26:1-21.